NPL हमारा संकल्प हो।
यह आंदोलन नहीं, चेतना है,
यह निषाद का नव-कल्प हो।
आज जो उठे हैं नाव लेकर,
कल राष्ट्र की दिशा बदलेंगे।
जो इतिहास में हाशिए पर थे,
अब वही भविष्य रचेंगे।
जागो निषाद! उठो निषाद!
यह समय नहीं है रुकने का।
निषाद समाज अब बनाना है,
हर बंधन आज है टूटने का।
सलाह कर राह बनाओ, निषाद समाज
विमर्श से 2026 के इस वर्ष को निषाद
क्रान्ति का ऐतिहासिक वर्ष बनाओ।
तभी नव वर्ष के संघर्ष सार्थक होगें।
जय भारत,
जय निषाद।
राजेन्द्र सिंह केवट

निषाद पर्सनल लॉ की कापी प्राप्त करने के लिए निषाद समाज की सदस्यता संस्था के क्यू आर कोड पर 100/रूपये भेजकर उसके इवेंट आइडी के साथ संस्था के पते .या मोबाइल नं पर भेजिए। पीडीएफ तत्काल आपके मोबाइल पर भेज दिया जायेगा। हार्ड कापी यदि चाहते हैं तो रजिस्टर्ड डाक का शुल्क भेजने पर आपके पते पर भेजा जा सकेगा।

इस पत्रक के लिए सहयोग राशि मात्र 10 रूपये ट्रस्ट में दान करें।

यूको बैंक
UCO BANK

निषाद समाज (ट्रस्ट)

कार्यालय निषाद समाज (ट्रस्ट)
22582/01, पवित्र नगर, लालकुआँ, पोस्ट पोली पाथर, ग्वारीघाट रोड, जिला जबलपुर, मध्यप्रदेश पिन कोड 482008
Phone: 9755013821
E-mail: nishad.pariwar.samaj@gmail.com

निषाद समाज (ट्रस्ट)

निषाद जागरण 4
राजेन्द्र सिंह केवट

जागों निषाद नाम की हस्ती,
खूशहाल कर दो हर गाँव हर बस्ती।

Mob 7897314809

निषाद जागरण 4

निषाद राष्ट्रीय क्रांति विमर्श

भटक मत अब नामों के जाल में,
तू इतिहास का वाहक है, सवाल में।
घटक–उपघटक की बेड़ियाँ तोड़,
निषाद राष्ट्र का शंखनाद जोड़।
जिसे बाँट दिया गया पहचान के टुकड़ों में,
उसे कैद कर दिया गया अनगिनत झुकड़ों में।
कभी कहार, कभी केवट, कभी मल्लाह कहलाया,
पर राष्ट्र-निर्माता निषाद नाम दबाया।
नाम बदलने से न बदलेगी पीड़ा,
मूल पहचान छोड़ने से बढ़ेगी कीड़ा।
जब तक निषाद बोध न जागेगा,
तब तक हर संघर्ष अधूरा भागेगा।
नदी, जल, जंगल, घाट, पहाड़—
तेरा जन्मसिद्ध अधिकार, तेरा हथियार।
पर घटक बनाकर तुझे लड़ाया गया,
तेरी क्रांति को भीतर ही दफनाया गया।
अब समय है—
भटकाव का अंत करो,
घटक नहीं, मूल निषाद बनो।
व्यक्ति नहीं, समाज सोचो,
निषाद राष्ट्र की मशाल रोशन करो।
जो कहे—"छोटा हित पहले",
वो बड़ा षड्यंत्र रचे हर पहर में।
छोटे हित से बड़े शोषण जन्मते हैं,
निषाद क्रांति से ही समाधान पनपते हैं।
एक पहचान—निषाद समाज
एक लक्ष्य—स्वाभिमान का उत्कर्ष।
यही दमन का प्रतिकार है,
यही भविष्य का अधिकार है।
अब न रुकना, न झुकना,
न घटक बनकर बिकना।
निषाद जागे—यही उद्घोष,
निषाद समाज—क्रांति का घोष।
एकमतेन आगाज
निषाद समाज.. 2
जय निषाद,
जय भारत।

गणतंत्र निषादों का कितना है?

आज गणतंत्र दिवस है देश में,
संविधान का उत्सव गाया जाता है,
हर चौक-चौराहे तिरंगा लहराता,
पर सवाल कोई पूछ नहीं पाता है।
संविधान कहता है—
सब बराबर, सबको अधिकार,
पर निषाद की झोपड़ी तक
क्यों नहीं पहुँचा यह संविधान-प्रचार?
हम वोट देते हैं,
सरकारें बनती–टूटती हैं,
दो-दो पाँच साल की सरकारें आई,
पर तब तक निषादों की सुध न आई।
अभी भी हमारी आवाज़ क्यों लुटती हैं?
हम संख्या में हैं,
हम शक्ति में हैं,
पर संसद में हम शून्य क्यों?
हम वंजल के पुत्र हैं,
पर नीति में हमारा नाम नहीं क्यों?
1947 में तो देश आजाद हुआ,
पर निषाद जरायम जाति की जंजीर में
क्यों जकड़ा रहा?
1952 में जरायम जाति का कलंक मिटा काग़ज़ों में,
आज 26 जनवरी का पर्व है,
पर बताओ—
क्या निषाद को मिला प्रतिनिधित्व
कहां संविधान का पूरा हक़ है?
वोट हमारा,
जनप्रतिनिधि उनका,
कानून भी हमारा नहीं—
यह गणतंत्र है या
नई गुलामी का ही कोई चिन्ह?
हमने हर चुनाव में
लोकतंत्र को कंधा दिया,
पर बदले में
सिर्फ़ वादों का
झूठा झुनझुना थमा दिया।
संविधान की प्रस्तावना पढ़ो—
"हम भारत के लोग…"
तो बताओ,
निषाद क्या भारत का लोग नहीं?
या सिर्फ़ मतदान का औज़ार ही सही?
आज गणतंत्र दिवस पर
हम यह चिंतन करें
केवल वोट देते रहेंगे या
प्रतिनिधित्व के लिए संघर्ष करेंगे ,?
हम भीख नहीं,
संवैधानिक अधिकार माँगतें।
वंजल निषाद संस्कृति—
हमारी पहचान है,
संसद, विधानसभा में नीति-निर्माण में हम
कहां हैं?
वहीं हमारी दावेदारी है।
आज यही चिंतन करो,
अब जाति जाति नहीं,
जमात बनो,
एकजुट हो निषाद समाज का
आगाज करो।
जिस दिन निषाद जाग गया,
उस दिन बदलेगा गणतंत्र का नक़्शा भी।
आज तिरंगा हाथ में है,
पर कब सत्ता की चाबी होगी,
जब निषाद वोट समझदार बनेगा है—
तभी निषाद क्रांति का इतिहास लिखेगी ?

जय निषाद,
जय भारत।

□□□